Series 9 – Comparison between Satpanth Atharv Ved and Original Hindu Atharv Ved / અથર્વ વેદના શ્લોકોની સરખામણી

realpatidar.com

Series 9 -Atharv Ved Shlok Comparison
Update: 13-Jan-2017 – Changed links to archive.org

04-May-2010
ભાઈઓ / Hi,

સતપંથ ધર્મમાં માનતા અથર્વ વેદ (સતપંથ અથર્વ વેદ) માં મંત્રોનું જણાવેલ અર્થ ઘટન હિંદુ ધર્મમાં માનતા અથર્વ વેદ (સાચો હિંદુ અથર્વ વેદ) માં મંત્રોનું અર્થ ઘટન જુદું છે.

Atharv Ved followed by Satpanth (Satpanth Atharv Ved) has explained the meaning of shloks in a way not in-conformity with Original Hindu Atharv Vedfollowed by Hindus worldwide.
એમાંથી અમુક શ્લોકો અને એના અર્થ ઘટન (બન્ને વેદો પ્રમાણે) આ email સાથે જોડું છું.

Link 1: http://issuu.com/patidar/docs/atharv_ved_shlok_comparison_-d
Link 2: http://issuu.com/patidar/docs/series_9_-attachment_-extract_of_relevant_pages_of
Link 3: http://issuu.com/patidar/docs/series_9_-attachment_-photos_of_original_hindu_ath
or
http://issuu.com/patidar
https://archive.org/details/Series9-AtharvVedShlokComparison

With this email I have attached the comparison of the explanations of few sloks from both the Atharv Veds.
ત્યાર બાદ તમે જાણશો કે "સતપંથ અથર્વ વેદ" અને "સાચો હિંદુ અથર્વ વેદ" વચ્ચે ઘણો ફરક છે. "સતપંથ અથર્વ વેદ" એ સાચો હિંદુ અથર્વ વેદ ને ભ્રસ્ટ કરીને બનાવામાં આવ્યો છે.

You will come to know that the "Satpanth Atharv Ved" and "Original Hindu Atharv Ved" are different. "Satpanth Atharv Ved" is corrupted form of "Original Hindu Atharv Ved"
Note: "Satpanth Atharv Ved" is sourced from the official website of Satpanth viz., www.satpanth.org

realpatidar.com

સાચો પાટીદાર / Real Patidar

realpatidar.com

Comparison of some Atharv Ved Shloks…. between Satpanth's Atharv Ved & Original Hindu Atharv Ved

1. Shlok No: 18/2/34

Cutting from Satpanth's Atharv Ved:

४३७८. ये निखाता ये परोप्ता ये दग्धा ये चोद्धिताः ।
सर्वांस्तानग्न आ वह पितॄन् हविषे अत्तवे ॥३४॥

हे अग्निदेव ! आप उन सभी पितरजनों के हवि सेवनार्थ लाएँ, जो भूमि में गाड़ने, खुला हवा या एकान्त स्थल में छोड़ देने अथवा अग्नि दहन द्वारा अन्त्येष्टि संस्कार के विधान से संस्कारित हुए हों तथा जो संस्कार क्रिया के पश्चात् ऊपरी पितृलोक में विराजमान हों ॥३४॥

Cutting from Original Hindu Atharv Ved:

ये निखाता ये परोप्ता ये दग्धा ये चोद्धिताः ।
सर्वांस्तानग्न आ वह पितॄन् हविषे अत्तवे ॥३४॥

भाषार्थः —(ये) जो पुरुष [ब्रह्मचर्य आदि सदाचार में] (निखाताः) दृढ़ गड़े हुए, (ये) जो (परोप्ताः) उत्तमता से बीज बोये गये, (ये) जो (दग्धाः) तपाये गये [वा चमकते हुये] (च) और (ये) जो (उद्धिताः) ऊंचे उठाये गये हैं। (अग्ने) हे विद्वान् ! (तान् सर्वान्) उन सब (पितॄन्) पितरों [पिता आदि ज्ञानियों] को (हविषे) ग्रहण योग्य भोजन (अत्तवे) खाने के लिये (आ वह) तू ले आ ॥३४॥

भावार्थः—मनुष्यों को योग्य है कि जो पुरुष दृढ़ स्वभाव, ब्रह्मचर्य सेवी, सुशिक्षित, परिश्रमी महाविद्वान् हों, उनका भोजन आदि से सदा सत्कार करें ॥३४॥

NOTE: Shloks are same, but the interpretation is totally different and unrelated.
1. Interpretation by Satpanth Atharv Ved is related to Antim Sanskar (Bhumi Daha)
2. Whereas in Original Hindu Atharv Ved, nothing is mentioned about Antim Sanskar
3. As per Hindu Religion, Antim Sanskar Vidhi is covered in Yajur Ved (Adhyay No 39) and NOT in Atharv Ved.

ar.com

realpatidar.com

2. Shlok No: 18/2/50

Cutting from Satpanth's Atharv Ved:

४३९४. इदमिद् वा उ नापरं दिवि पश्यसि सूर्यम्।
माता पुत्रं यथा सिचाभ्यं नं भूम ऊर्णुहि ॥५०॥

हे मृतात्मन् ! आप द्युलोक में जो सूर्य देखते हैं, वही आपका (स्थान) है, कोई अन्य नहीं। हे पृथ्वी देवि ! आप उसी प्रकार इस मृत पुरुष को अपने तेज से आच्छादित करें, जिस प्रकार माता अपने पुत्र को आच्छादित रखती है ॥५०॥

Cutting from Original Hindu Atharv Ved:

इदमिद् वा उ नापरं दिवि पश्यसि सूर्यम् ।
माता पुत्रं यथा सिचाभ्येनं भूम ऊर्णुहि ॥५०॥

भावार्थः—[हे जीव !] (इदम् इत्) यही [सर्वव्यापक ब्रह्म] (वै) निश्चय करके है, (उ) और (अपरम्) दूसरा (न) नहीं है, तू (दिवि) ज्ञान प्रकाश में (सूर्यम्) सर्वप्रेरक परमात्मा को (पश्यसि) देखता है।

(यथा) जैसे (माता) माता (पुत्रम्) पुत्र को (सिचा) अपने आंचल से [वैसे] (भूमे) हे सर्वाधार परमेश्वर ! (एनम्) इस [जीव] को (अभि) सब ओर से (ऊर्णुहि) ढकले ॥५०॥

भावार्थः—परमात्मा सर्वव्यापक है, उसके समान और कोई नहीं है, वह ज्ञान नेत्र से दीखता है। वह अपने शरणागत भक्तों की इस प्रकार

सू० २ अष्टादशं काण्डम् ८६१

सर्वथा रक्षा करता है, जैसे माता अपने छोटे बच्चों की वस्त्र आदि से रक्षा करती है ॥५०॥

इस मन्त्र का उत्तरार्द्ध ऋग्वेद में है—१०। १८। ११, और आगे है—
अथर्व १८। ३। ५०॥

Shlok nu arth gathan alag karvama aavyun chhe.

realpatidar.com

realpatidar.com

3.Shlok No: 18/2/52

Cutting from Satpanth's Atharv Ved:

४३९६. अभि त्वोर्णोमि पृथिव्या मातुर्वस्त्रेण भद्रया ।
जीवेषु भद्रं तन्मयि स्वधा पितृषु सा त्वयि ॥५२॥

हे मृतक ! हम तुम्हें पृथ्वी माता के मंगलकारी वस्त्र से आच्छादित करते हैं । इस लोक में जो कल्याणमय है, उसे हम प्राप्त करें तथा पितृलोक में (परलोक में) जो स्वधान्न है, उसे आप (मृतात्मा) प्राप्त करें ॥५२॥

Cutting from Original Hindu Atharv Ved:

अभि त्वोर्णोमि पृथिव्या मातुर्वस्त्रेण भद्रया ।
जीवेषु भद्रं तन्मयि स्वधा पितृषु सा त्वयि ।।५२।।

भावार्थः [हे जीव !] (त्वा) तुझे (पृथिव्याः) जगत् के विस्तार करने वाले परमेश्वर के [दिये] (भद्रया) कल्याण से (अभि) सब ओर से (ऊर्णोमि) मैं ढकता हूं, [जैसे] (मातुः) माता के (वस्त्रेण) वस्त्र से [बालक को] । (जीवेषु) जीवों में (भद्रम्) [जो] कल्याण हो, (तत्) वह (मयि) मुझ में [हो] (पितृषु) पितरों [रक्षक महात्माओं] में (स्वधा) [जो आत्मधारण शक्ति हो (सा) वह (त्वयि) तुझ में होवे ।।५२।।

भावार्थः—प्रत्येक मनुष्य परमात्मा की शरण में रहकर इस प्रकार सुख पावे, जैसे बालक माता के पास पाता है, और ऐसा प्रयत्न करे कि सब प्राणी एक दूसरे के समान सुख पावें और ज्ञानी महात्माओं के समान आत्मावलम्बन करें ।।५२।।

realpatidar.com

realpatidar.com

4. Shlok No: 18/4/48

Cutting from Satpanth's Atharv Ved:

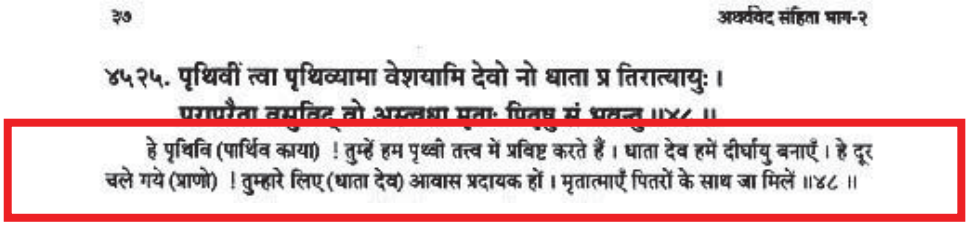

३७ अथर्ववेद संहिता भाग-२

४५२५. पृथिवीं त्वा पृथिव्यामा वेशयामि देवो नो धाता प्र तिरात्यायुः ।
परापरैता वसुविद् वो अस्त्वधा मृताः पितृषु सं भवन्तु ॥४८॥

हे पृथिवि (पार्थिव काया) ! तुम्हें हम पृथ्वी तत्व में प्रविष्ट करते हैं । धाता देव हमें दीर्घायु बनाएँ । हे दूर चले गये (प्राणो) ! तुम्हारे लिए (धाता देव) आवास प्रदायक हों । मृतात्माएँ पितरों के साथ जा मिलें ॥४८॥

Cutting from Original Hindu Atharv Ved:

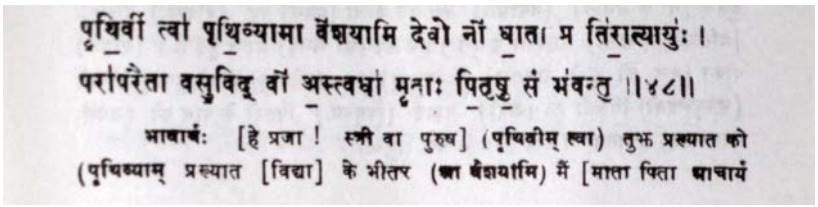

पृथिवीं त्वा पृथिव्यामा वेशयामि देवो नो धाता प्र तिरात्यायुः ।
परापरैता वसुविद् वो अस्त्वधा मृताः पितृषु सं भवन्तु ॥४८॥

भावार्थः [हे प्रजा ! स्त्री वा पुरुष] (पृथिवीम् त्वा) तुझ प्रख्यात को (पृथिव्याम् प्रख्यात [विद्या] के भीतर (आ वेशयामि) मैं [माता पिता आचार्य

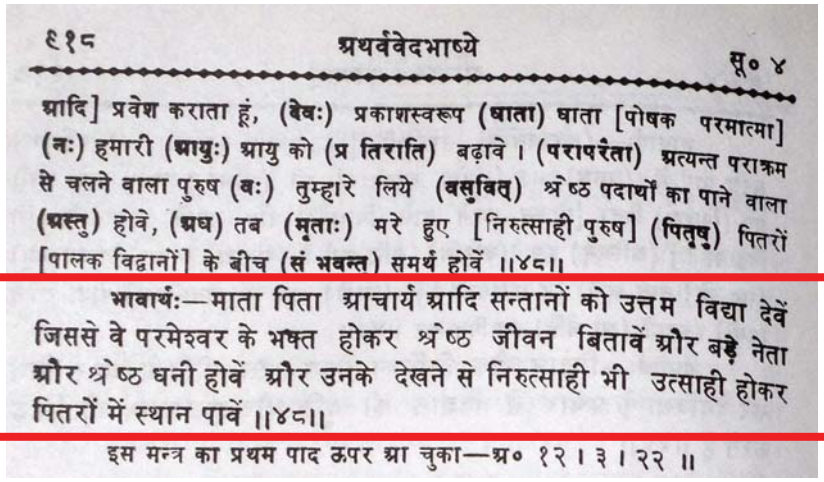

९१८ अथर्ववेदभाष्ये सू० ४

आदि] प्रवेश कराता हूं, (देवः) प्रकाशस्वरूप (धाता) धाता [पोषक परमात्मा] (नः) हमारी (आयुः) आयु को (प्र तिराति) बढ़ावे । (परापरैता) अत्यन्त पराक्रम से चलने वाला पुरुष (वः) तुम्हारे लिये (वसुवित्) श्रेष्ठ पदार्थों का पाने वाला (अस्तु) होवे, (अध) तब (मृताः) मरे हुए [निरुत्साही पुरुष] (पितृषु) पितरों [पालक विद्वानों] के बीच (सं भवन्त) समर्थ होवें ॥४८॥

भावार्थः—माता पिता आचार्य आदि सन्तानों को उत्तम विद्या देवें जिससे वे परमेश्वर के भक्त होकर श्रेष्ठ जीवन बितावें और बड़े नेता और श्रेष्ठ धनी होवें और उनके देखने से निरुत्साही भी उत्साही होकर पितरों में स्थान पावें ॥४८॥

इस मन्त्र का प्रथम पाद ऊपर आ चुका—अ० १२ । ३ । २२ ॥

realpatidar.com

realpatidar.com

5. Shlok No: 18/4/66

Cutting from Satpanth's Atharv Ved:

४५४३. असौ हा इह ते मनः ककुत्सलमिव जामयः । अभ्ये नं भूम ऊर्णुहि ॥६६ ॥

हे अमुक नामवाले प्रेतपुरुष ! आपकी आसक्ति इन ईंटों द्वारा बनाये गये स्थान के प्रति है । हे श्मशान स्थल रूप भूमे ! आप उसी प्रकार इस स्थल पर स्थित प्रेत को आच्छादित करें, जिस प्रकार कुलीन स्त्रियाँ अपने कन्धे (सिर) को वस्त्र से ढक लेती हैं ॥६६ ॥

Cutting from Original Hindu Atharv Ved:

असौ हा इह ते मनः ककुत्सलमिव जामयः ।
अभ्येनं भूम ऊर्णुहि ॥६६॥

९२६ अथ वेदभाष्ये सू० ४

भावार्थः—[हे मनुष्य !] (असौ) वह [पिता आदि] (है) निश्चय करके (इह) यहां पर [हम में] (ते) तेरे (मनः) मन को [ढकता है], (इव) जैसे (जामयः) कुल स्त्रियां (ककुत्सलम्) सुख का शब्द सुनाने वाले को [अर्थात् लड़ैते बालक को वस्त्र से ढकती हैं] । (भूमे) हे भूमि तुल्य [सर्वाधार विद्वान् !] (एनम्) इस [पिता आदि जन] को (अभि) सब ओर से (ऊर्णुहि) तू ढक [सुख दे] ॥६६॥

भावार्थः—जैसे माता पिता आदि पितर लोग छोटे प्रिय सन्तान की वस्त्र आदि से रक्षा करते और ज्ञान देते हैं, वैसे ही वे लोग उन पिता आदि की यथोचित सेवा करें ॥६६॥

इस मन्त्र का अन्तिम पाद आ चुका है—अ० १८ । २ । ५०, ५१, तथा १८ । ३ । ५० और इस मन्त्र का मिलान भी उन मन्त्रों से करो ॥

realpatidar.com